चङा से चइजनि, चङो जनीं जे चित में,
बुराईअ कंहिंजीअ डे, सामी कीन डिसनि,
दया-दिरिष्टी रखी करे, सभ ते किरपा कनि,
सदा सम रहनि, इस्थित आतम-पद ते.

अच्छा इन्सान, उत्तम पुरुष, भलामानुस कौन है ? सामीजी ऐसे मनुष्यों के लक्षण बताते हुए कहते हैं, जिन के मन में अच्छाई है, भलमनसाहत है, सज्जनता और भद्रता है, ऐसे मनुष्यों को 'भलमानुस' की, 'चंगे' की संज्ञा दी जा सकती है। ऐसे अच्छे लोग दूसरे किसी की बुराई की ओर, किसी के दोष या अवगुणों की ओर नहीं देखते। वे अपनी दया-दृष्टि सब पर डालते हैं और सब पर कृपा करते हैं। समानता का भाव लिए ऐसे सत्पुरुष अपने अंदर, आत्म-पद में लीन रहते है, मग्न रहते हैं। अपने आत्माराम से एकरूप बने रहते हैं।

समाज में अनेक प्रकार के मनुष्य होते हैं। अच्छे-बुरे, ज्ञानी-अज्ञानी, पुण्यवान पापी, बड़े-छोटे, विनम्र-अहंकारी आदि। अच्छे लोग अनेक सद्‌गुणों से संपन्न होते हैं। उन में उदारता, परोपकारिता, दयालुता जैसे गुण भी होते हैं। उदारता और परोपकार तो महानुभावता के लक्षण है। एक उदार एवं परोपकारी मनुष्य स्वार्थ-रहित होता है। उनके मन में दया की भावना होती है। वे अपने मन में किसी के प्रति ईर्ष्या या वैर का भाव नहीं रखते । सज्जन एवं उदार व्यक्ति का मन और हृदय हमेशा देवत्व से जुड़ा रहता है। परोपकार ही उनके जीवन का फल होता है। संत कबीर के शब्दो में,

हाड़ बड़ा हरि भजन करि, द्रव्य बड़ा कछु देह।
अकल बड़ी उपकार करि, जीवन का फल येह॥

भले मनुष्य किसी की बुराई नहीं करते न तो किसी के अवगुणों/दोषों की ओर इंगित करते हैं। पर-निंदा से दूर रहकर वे दूसरों की भलाई की ही बात सोचते हैं। ऐसे दयालु जीव पाप-कर्म से भी दूर रहते हैं। सम-दृष्टि धारण करने वाले ये लोग निष्कपट/निश्छल होते हैं। वे तो अपने अंतर्जगत में अपनी अंतरात्मा से एकरूपता बनाये रखते हैं। प्रियतम परमात्मा से प्रीति करने की बेला का यह दृश्य देखिए-

नयनों की करि कोठरी, पुतरी पलँग बिछाय।
पलकों की चिक डारिकै, पिय को लिया रिझाय॥ (कबीर)

■